"दिन बीते हैं बड़े"

—सुनील तनेजा, (जयपुर)

प्यारे सुन्दर साथ जी, आज हमको इस माया में उतरे चार सौ साल से भी अधिक हो गये हैं लेकिन आज पहचान हो जाने के बाद भी हमारे दिल में पिया की जुदाई का दर्द नहीं है। आज भी हमें ये खूब सूरत माया लुभा रही है। आजधनी ने हमें सारी बातें याद दिला कर हमें पूरी सुध दे दी है लेकिन फिर भी हम माया के क्षणिक सुखों के वास्ते अपने धाम के अखण्ड सुख भुला रहे हैं। हमारा मन माया के इतने आधीन हो गया है कि हम सब कुछ जान कर भी अन्जान बने हुए हैं। माया का एक हलका सा झटका लगने पर हमारा ईमान डोल जाता है। हम अपने धनी की साहेबी को भूल जाते हैं। हमें इतना भी याद नहीं रहता कि अगर धनी ने माया में हमें दुख दिखाया है तो हमारी इच्छा को ही पूरा किया है क्योंकि धाम में धनी से इशक रब्द के बाद दुख का खेल ही तो मांगा था। धनी के बार बार मना करने पर भी हम नहीं माने थे और अपने प्रीतम से यहां तक कह दिया था।

ऐ कौन साहेबी है तुम्हारी,
कौन इश्क है तुम ।
पिया राजी करो दिखाए के,
हम बैठे पकड़ कदम ॥

और फिर तब धनी ने हमें समझाया था कि जुदे-जुदे परिवारों में चले जाओगे, और मेरे याद दिलाने पर भी तुम भूले सम्बन्ध की पहचान नहीं कर पाओगे, तो हमने धनी से डींगें मार कर कहा था।

सौ बेर देखो आजमाए के,
तो भी न भूलेंगे हम।

और आज मूलस्वरूप की पहचान हो जाने के बाद भी हमारा मन माया को छोड़ना नहीं चाहता। हमारे दिलों में सुन्दर साथ के प्रति प्यार नहीं है। खानदान और बिरादरी के शिकंजों ने हमें इतना जकड़ रखा है कि हम अपने झूठे रिश्तेदारों के लिए इन सुन्दरसाथ को छोड़ सकते हैं जिनसे हमने वायदे किये थे कि अगर मैं सो जाऊँ तो तुम मुझे जगा देना और अगर तुम सो गयी तो मैं तुम्हें जगा दूँगी। तो सुन्दर साथ जी क्या कारण है कि हमारे दिल में धनी से

Nijanand App

बिछुड़ने का दर्द नहीं है। आज हमें वो धाम में किये गए वायदे क्यों याद नहीं हैं। हमारे दिलों में सुन्दर साथ के प्रति प्यार क्यों नहीं है। हम यह क्यों नहीं जान पा रहे हैं। क्या कारण है कि आज हमें आशिक और माशूक का सम्बन्ध भी याद नहीं रहा। इसका क्या कारण है कि जागने के बाद भी हम माया में पूरी तरह डूबे हुए हैं। माया के तिलस्मी जाल में हम बुरी तरह फँसे हैं।

जब तक हम माया के इस जाल को नहीं तोड़ेंगें, हम यहां बैठे धाम के सुख नही पा सकेंगे और न ही अपने आप को हाँसी से बचा सकेंगे। तो सुन्दर साथ जी, यदि माया हम पर प्रहार करती है तो हमें अपने धनी पर पूरा यकीन कर उसका दृढ़ता से मुकाबला करना चाहिए क्यों कि हम यह जानते हैं कि हमारा प्रीतम अपनी अंगना को कभी दुःखी नही देख सकता—

जो दुःख मेरी सैमन को,
सो सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के,
अपनी रूह नहीं दोए॥

तो सुन्दर साथ जी चेतो माया ने हमको बहुत नचा लिया है। जब हममें ये रेहेनी आ जायेगी तो हमें ये एहसास हो जाएगा कि माया में सोते हुए बहुत समय बीत चुका है। अब हमें निज घर को चलना है, जैसा कि मास्टर हंसराज जी ने कहा है—

पिया जी, धनी जी,
खेल को बस करो।
ले चलो, ले चलो,
दिन बीते हैं बड़े॥

इन्हीं शब्दों के साथ ये सुन्दर साथ के चरणों में प्रणाम करती है और धाम धनी से प्रार्थना करती है कि अब इस खेल को खत्म करें और हम सब सुन्दर साथ को अपने चरणों में ले लेवें।

(कोई गलती हो तो क्षमा करें)

Nijanand App